Dr. Kumari Priyanka

History department

HD Jain college ara

Notes for BA part 3,paper 5

Topic:–मुगल मराठा संबंध पर प्रकाश डालें।

मुगल-मराठा संबंध तनावपूर्ण थे। मराठों ने 16वीं शताब्दी से लेकर 18वीं शताब्दी तक दक्कन के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे एक स्वायत्त रियासत स्थापित करने के लिए दक्कन के राज्यों के साथ संघर्ष में लगे हुए थे। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक मुगलों द्वारा दक्कन के एक बड़े हिस्से पर कब्ज़ा कर लेने के कारण, मुगल मराठा संबंधों में तनाव आना शुरू हो गया। मराठा साम्राज्य और **मुग़ल साम्राज्य के** बीच 1680 से 1707 तक पश्चिमी भारत में युद्ध होते रहे, जिन्हें मुग़ल-मराठा युद्ध के नाम से जाना जाता है।

मुगल मराठा संबंध को हम विभिन्न चरणों के द्वारा समझ सकते हैं।

मुगल मराठा संबंध : प्रथम चरण

मुगलों ने दक्कन की राजनीति में मुगल मराठा संबंधों के महत्व को समझा।

- 1615 में, **जहाँगीर** ने कुछ मराठा सरदारों को अपने साथ शामिल होने के लिए मना लिया। परिणामस्वरूप (1616) मुगलों ने संयुक्त दक्कनी सेनाओं को हरा दिया।
- 1629 की शुरुआत में, शाहजहाँ ने मुगल मराठा संबंधों को प्रभावित करने की कोशिश की। शिवाजी के पिता, शाहजी, उस समय मुगलों में शामिल हो गए, लेकिन अंततः वह उनसे अलग हो गए और उनके खिलाफ साजिश रची।
- ऐसा प्रतीत होता है कि औरंगजेब ने भी अपने पिता की कार्यशैली का अनुसरण किया था। शिवाजी के विरुद्ध बीजापुर-मुगल गठबंधन की औरंगजेब की महत्वाकांक्षा एक दुःस्वप्न साबित हुई।
- 1657 में शिवाजी के साथ सेना में शामिल होने के औरंगजेब के शुरुआती प्रयास असफल रहे। ऐसा इसलिए था क्योंकि शिवाजी ने दाभोल और आदिल शाही कोंकण पर जोर दिया था। बीजापुर जाने के तुरंत बाद, शिवाजी ने मुगल दक्कन पर आक्रमण किया।
- औरंगजेब के शासन के अंत और सत्ता के लिए लड़ाई ने शिवाजी को अपनी इच्छानुसार कार्य करने का पूर्ण शासन दिया। जल्द ही उसने महुली, भिवंडी और कल्याण को अपने नियंत्रण में ले लिया।

- 5 अप्रैल, 1663 को पूना में शिवाजी ने रात के समय मुगल छावनी के मध्य में घात लगाकर शाइस्ता खाँ पर हमला कर दिया। यह सभी के लिए एक बहुत बड़ा झटका था। इस हमले से मुगलों को प्रतिष्ठा की दृष्टि से अंतिम झटका लगा।
- उसके बाद मराठों ने पहली बार (6-10 जनवरी 1664) सूरत पर कब्ज़ा किया। इससे मुगल मराठा संबंधों को नए आयाम मिला।

मुगल मराठा संबंध : दूसरा चरण (1664-1667)

शिवाजी के बढ़ते खतरे के कारण मुगलों को पूरी स्थिति का पुनर्मूल्यांकन करना पड़ा। दक्कन के वायसराय के रूप में, मिर्जा राजा जय सिंह को अब औरंगजेब द्वारा नियुक्त किया गया था। सावधानीपूर्वक विस्तार के मुग़ल दर्शन के विपरीत, जय सिंह ने दक्कन की पूर्ण विजय के लिए एक मास्टर प्लान तैयार किया।

- दक्कन में अपने अभियान की शुरुआत से ही जय सिंह ने शिवाजी पर लगातार दबाव डाला। पुरंदर में वह शिवाजी को हराने में सफल रहा।
- अब, जय सिंह ने मुगल मराठा संबंधों (Mughal Maratha Relations in Hindi) का सुझाव दिया। शिवाजी ने पुरंदर की आगामी संधि (1665) का उपयोग करते हुए राजगढ़ सहित 12 अन्य किलों और निज़ाम शाही क्षेत्र के 35 किलों में से 23 को छोड़ दिया। नुकसान की भरपाई बालाघाट और बियापुरी तालकोंकन में की जानी थी। इसके अलावा, शिवाजी का बेटा 5000 ज़ात **मनसबदार** के रूप में मुगल सेना में शामिल हो गया।
- शिवाजी को नाजुक मुगल सीमा से दूर रखने की जय सिंह की योजना के लिए यह बिल्कुल उपयुक्त था। शिवाजी और बीजापुर के शासकों के बीच संघर्ष के बीज भी एक साथ बोये गये।
- बीजापुर-गोलकुंडा गठबंधन के बाद, जय सिंह ने शिवाजी को आगरा में औरंगजेब से मिलने के लिए कहा। बहरहाल, मुगल दरबार से कथित अपमान के कारण शिवाजी को आगरा में कैद कर लिया गया।
- औरंगजेब की अनिच्छा ने जय सिंह की योजना और आगरा में शिवाजी की कैद को बुरी तरह से पटरी से उतार दिया।
- इस समय, जय सिंह के अनुसार, दक्कन में मुगल कुलीनों के बीच विवादों को रोकने का एकमात्र तरीका सम्राट का वहां उपस्थित होना था। लेकिन, जय सिंह की रणनीति तब विफल हो गई जब 1666 में शिवाजी आगरा से भाग गए। मई 1667 में प्रिंस मुअज्जम ने दक्कन के मुगल वायसराय के रूप में पदभार संभाला और जय सिंह से काबुल जाने का अनुरोध किया गया। इससे मुगल मराठा संबंधों को एक नया आयाम मिला।

मुगल मराठा संबंध : तीसरा चरण

आगरा छोड़ने के बाद, शिवाजी का मुगलों से लड़ने की तत्काल कोई इच्छा नहीं थी। इसके बजाय, उन्होंने सौहार्दपूर्ण बातचीत की तलाश की।

- शिवाजी के पुत्र संभाजी को राजकुमार मुअज्जम से 5,000 ज़ात का मनसब मिला, जिन्होंने बरार में एक जागीर भी हासिल की।

- उनके बेटे और शिवाजी के बीच की दोस्ती ने औरंगज़ेब को भयभीत कर दिया, जिसे विद्रोह की आशंका थी। **पुरंदर संधि (1665)** ने मुगलों को कई किले दिए, लेकिन शिवाजी ने उन सभी पर हमला कर दिया। बीच-बीच में शहजादा मुअज्जम और दिलेर खां बहस करने लगे। शिवाजी ने परिस्थिति का फायदा उठाया और सूरत को एक बार फिर बाहर कर दिया। मराठों ने कई महत्वपूर्ण किलों पर कब्ज़ा कर लिया। इससे मुगल मराठा संबंधों को एक नया आयाम मिला।
- मराठों की जीत से मुगल दरबार चिंतित हो गया। बहादुर खान एक कमजोर टुकड़ी के साथ अकेला रह गया था। उत्तरपश्चिम में अफगान अशांति के कारण औरंगजेब को दक्कन से पीछे हटना पड़ा।
- शिवाजी ने परिस्थितियों का भरपूर लाभ उठाया। 6 जून, 1674 को उसने स्वयं को राजा घोषित कर दिया। उसी वर्ष जुलाई में बहादुर खान का शिविर लूट लिया गया। 1675 की शुरुआत में, मुगल मराठा संबंधों की एक योजना भी सफल होने में विफल रही।
- लेकिन, शिवाजी ने अंततः अपने वचन से विश्वासघात किया और गोलकुंडा शासक जिंजी और अन्य क्षेत्रों को देने से इनकार कर दिया। परिणामस्वरूप, दोनों के बीच फूट हो गई और गोलकुंडा के शासक ने शिवाजी को उनका वार्षिक वेतन देना बंद कर दिया। बीजापुर के किले में घुसने के लिए शिवाजी के प्रयास से बीजापुर के शासक भी क्रोधित हो गए।
- फिर भी, मराठा दरबार में उत्तराधिकार के मुद्दे पर मतभेद था। शिवाजी के छोटे बेटे राजाराम को देस और कोंकण उपहार में मिले। इससे मुगल मराठा संबंधों को नए आयाम मिले।
- दिलेर खान ने डेस को बचाने में संभाजी को मदद की पेशकश करके इस स्थिति से लाभ उठाने का प्रयास किया। बदले में उसने उससे दोस्ती मांगी. संभाजी ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और मुगलों ने उन्हें 7000 का मनसब दिया। अंत में, औरंगजेब ने आक्रामक विजय रणनीति अपनाई।

चौथा चरण (1680-1707):

दक्कन के इतिहास के बारे में वर्ष 1680 महत्वपूर्ण है। इस वर्ष 23 मार्च को शिवाजी का निधन हो गया और औरंगजेब ने भी दक्कन में मामलों को संभालने के लिए वहां जाने का फैसला किया। मुगलों ने अब पूर्ण विजय का अभियान शुरू किया।

- इसके तुरंत बाद के दशकों में मराठों के लिए एक चुनौतीपूर्ण समय था।शिवाजी के राज्य को उनके पुत्रों के बीच विभाजित करने के विवाद ने मराठा कुलीनों को अपनी आवाज उठाने का मौका दिया। संभाजी को राजा के रूप में स्वीकार करने के बजाय, मराठा सरदारों ने राजाराम को प्रभारी घोषित कर दिया। संभाजी ने त्वरित प्रतिक्रिया दी और अन्नाजी दत्तो और राजाराम को कैद कर लिया। इससे **मुगल मराठा संबंधों** को नए आयाम मिले।
- स्थिति का पता चलते ही संभाजी ने दमन अभियान शुरू कर दिया। शिवाजी के सभी समर्थक उनके क्रोध को सहने के लिए मजबूर हो गये। चीजों को सही करने के बजाय, संभाजी तेजी से नशे में और भोगवादी हो गए। संभाजी के कार्यों के कारण मराठा शिविर में बड़े पैमाने पर दलबदल हुआ, जो मुगलों के पक्ष में था। इन स्थितियों के आलोक में, संभाजी को मृत्युदंड (11 मार्च, 1689) से पहले मुगलों द्वारा हिरासत में लिया गया (फरवरी, 1689)।

- संभाजी की फाँसी (1689) ने मुगल मराठा संबंधों को नये आयाम दिये। अपनी जीत के बाद, मुगलों को स्थानीय लोगों के तीव्र प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। राजाराम, जो प्रतापगढ़ भाग गए थे, ने त्वरित रैली में मराठों का नेतृत्व किया।
- लेकिन, मुगलों के दबाव ने उन्हें पन्हाला भागने के लिए मजबूर कर दिया, जहां मराठों ने मुगलों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। राजाराम को जिंजी छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। 1700 के आसपास, सतारा और उसके बाद सिंहाग पर मुगलों ने कब्ज़ा कर लिया। इन जीतों के बावजूद, मुगल राजाराम को नहीं जीत सके या मराठा वर्चस्व को कमजोर नहीं कर सके। मुग़ल मराठा संबंधों में संघर्ष अनवरत चलता रहा। उन्होंने तेजी से खोए हुए क्षेत्रों को पुनः प्राप्त कर लिया।
- मुग़ल सेना को अत्यधिक कठिनाइयों और कष्टों का सामना करना पड़ा और अपनी सारी विजय खोनी पड़ी। इससे मुगल सेना का मनोबल बुरी तरह नष्ट हो गया, जो पहले से ही थकी हुई और टूटी हुई दिख रही थी।
- इस बिंदु तक, औरंगज़ेब को इतनी लंबी लड़ाई की व्यर्थता समझ में आ गई थी। वह अहमदाबाद की ओर मुड़ गया। फिर भी 1707 में उनका निधन हो गया। इस प्रकार वह एक सुलह रणनीति स्थापित करने में असमर्थ रहे।